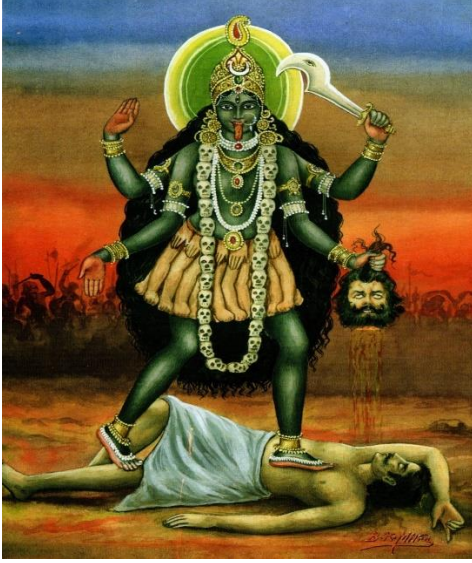


# ॥ काली महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

## अनुक्रमाणिका

1. काली	02
2. काली मन्त्र	04
3. काली ध्यानम्	07
4. काली कर्पूर स्तोत्रम्	08
5. जगन्मंगल काली कवचम्	11
6. भद्रकाली स्तुतिः	14
7. श्री कालिकाष्टकम्	15
8. काली अष्टोत्तरशत नामावली	16

## माँ काली



## काली यन्त्र





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**I creator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**

## ॥ देवी काली ॥

देवी काली को मां दुर्गा की दस महाविद्याओं में से प्रथम मानी जाती हैं। महाभागवत के अनुसार महाकाली ही मुख्य हैं और उन्हीं के उग्र और सौम्य दो रूपों में अनेक रूप धारण करनेवाली दस महाविद्याएँ हैं। विद्यापति भगवान् शिवकी शक्तियाँ ये महाविद्याएँ अनन्त सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं।

बृहन्नीलतन्त्र में कहा गया है कि रक्त और कृष्णभेद से काली ही दो रूपों में अधिष्ठित हैं। कृष्णा का नाम 'दक्षिणा' और रक्तवर्णा का नाम 'सुन्दरी' है।

दुर्गासप्तशती के अनुसार एक बार शुम्भ-निशुम्भ के अत्याचार से व्यथित होकर देवताओं ने हिमालय पर जाकर देवीसूक्त से देवी की स्तुति की, तब गौरी की देह से कौशिकी का प्राकट्य हुआ। कौशिकी के अलग होते ही अम्बा पार्वती का स्वरूप कृष्ण हो गया, जो 'काली' नामसे विख्यात हुई।

काली को नीलरूपा होने के कारण तारा भी कहते हैं। नारद-पाञ्चरात्र के अनुसार एक बार काली के मन में आया कि वे पुनः गौरी हो जायँ। यह सोचकर वे अन्तर्धान हो गयीं। शिवजी ने नारदजी से उनका पता पूछा नारदजी ने उनसे सुमेरु के उत्तर में देवी के प्रत्यक्ष उपस्थित होने की बात कही। शिवजी की प्रेरणा से नारदजी वहाँ गये। उन्होंने देवी से शिवजी के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव सुनकर देवी क्रुद्ध हो गयीं और उनकी देह से एक अन्य षोडशी विग्रह प्रकट हुआ और उससे छायाविग्रह त्रिपुरभैरवी का प्राकट्य हुआ।

देवी काली शक्ति का स्वरूप है। मां ने यह काली रूप दैत्यों के संहार के लिए लिया था इनकी उत्पत्ति राक्षसों का अंत करने के लिए हुई थी तथा धर्म की रक्षा और उसकी स्थापना ही इनकी उत्पत्ति का कारण था देवी काली की पूजा सम्पूर्ण भारत में कि जाती है। देवी काली की व्युत्पत्ति काल अथवा समय से है जो सब को ग्रास कर लेती है। देवी काली का स्वरूप काला व डरावना हैं किंतु भक्तों को अभय वर देने वाला है। समस्त जन का दुःख दूर करने के लिये अनेकों रूप धारण कर के अवतार लेती रहीं हैं। देवी काली काल और परिवर्तन की देवी मानी गई हैं तंत्र साधना में तांत्रिक देवी काली के रूप की उपासना किया करते हैं। देवी काली को भवतारणी अर्थात् 'ब्रह्मांड के उद्धारक' रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है।

तंत्र साधना में देवी काली की उपासना दीक्षागम्य है, तथापि अनन्य शरणागति के द्वारा उनकी कृपा किसी को भी प्राप्त हो सकती है। मूर्ति, मन्त्र अथवा गुरुद्वारा उपदिष्ट किसी भी आधार पर भक्तिभाव से, मन्त्र-जप, पूजा, होम और पुरश्चरण करने से भगवती काली प्रसन्न हो जाती हैं। उनकी प्रसन्नता से साधक को सहज ही सम्पूर्ण अभीष्टों की प्राप्ति हो जाती है।

यह काली शिव प्रिया चामुंडा का साक्षात् स्वरूप है, जिसने देव-दानव युद्ध में देवताओं को विजय दिलवाई थी। इनका क्रोध तभी शांत हुआ था जब शिव इनके चरणों में लेट गए थे।

- मुख्य नाम काली
  - नाम माता कालिका, आद्या, मूल प्रकृति, प्रथमा, मुण्डमालिनी
  - अन्य नाम (४ रूप) दक्षिणा काली, शमशान काली, मातृ काली और महाकाली ।
  - दुर्गा का एक रूप माता कालिका 10 महाविद्याओं में से एक
  - भैरव
  - भगवान के २४ अवतारों से सम्बद्ध : श्री कृष्ण
  - तिथि, दिन, वार अमावस्या, शुक्रवार
  - कुल काली कुल
  - दिशा
  - स्वभाव
  - कार्य
  - शारीरिक वर्ण
  - शस्त्र त्रिशूल और तलवार
  - ग्रन्थ कालिका पुराण
  - राक्षस वध महिषासुर, रक्तबीज ।
  - विशेषता महाविद्या, सिद्धिदात्री
- काली माँ के प्रमुख तीन स्थान हैं ।
  - कोलकाता में कालीघाट पर जो एक शक्तिपीठ भी है ।
  - मध्यप्रदेश के उज्जैन में भैरवगढ़ में गढ़कालिका मंदिर इसे भी शक्तिपीठ में शामिल किया है ।
  - गुजरात में पावागढ़ की पहाड़ी पर स्थित महाकाली का जाग्रत मंदिर चमत्कारिक रूप से मनोकामना पूर्ण करने वाला है।

## ॥ काली माता का मंत्र ॥

- **नोट :** काली महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए । क्यूकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है ।
- **मंत्र** ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके स्वाहा ।
- **मंत्र** क्रीं ह्रीं हुं दक्षिणे कालिके स्वाहा: । हकीक की माला से नौ माला जाप करें ।
- **1 अक्षरी मंत्र** ॐ क्रीं ।  
यह मां काली का एकाक्षरी मंत्र है । इसका जप मां के सभी रूपों की आराधना, उपासना और साधना में किया जा सकता है । मां काली के इस एकाक्षरी मंत्र को मां चिंतामणि काली का विशेष मंत्र भी कहा जाता है ।
- **3 अक्षरी मंत्र** ॐ क्रीं हुं ह्रीं ।  
मां काली की साधना व उनके प्रचंड रूपों की आराधना के लिए यह तीन अक्षरी मंत्र एक विशिष्ट मंत्र है । एकाक्षरी व त्रयाक्षरी मंत्रों को तांत्रिक साधन के मंत्र के पहले और बाद में संपुट की तरह भी लगाया जा सकता है ।
- **5 अक्षरी मंत्र** ॐ क्रीं हुं ह्रीं हूं फट् ।  
माना जाता है कि इस पंचाक्षरी मंत्र का जाप प्रतिदिन प्रातःकाल में 108 बार किया जाये तो मां काली साधक के सभी दुखों का निवारण करके उसके यहां धन-धान्य की वृद्धि करती हैं । पारिवारिक शांति के लिए भी इस मंत्र का जप किया जाता है ।
- **6 अक्षरी मंत्र** ॐ क्रीं कालिके स्वाहा ।  
इस षडाक्षरी मंत्र का जप सम्मोहन आदि तांत्रिक सिद्धियों के लिए किया जाता है । यह मंत्र तीनों लोकों को मोहित करने वाला है ।
- **7 अक्षरी मंत्र** ॐ हूं ह्रीं हूं फट् स्वाहा ।  
यह मंत्र धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए है ।
- **22 अक्षरी मंत्र** ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।  
इस मंत्र के जरिये दक्षिण काली का आह्वान किया जाता है । शत्रुओं के विनाश के लिए साधक इस मंत्र का प्रयोग करते हैं । तंत्र विद्या में मां काली की साधना के लिए यह मंत्र काफी लोकप्रिय है । मां काली ज्ञान, मोक्ष तथा शत्रु नाश करने की अधिष्ठात्री देवी हैं । इनकी कृपा से समस्त दुर्भाग्य दूर हो जाते हैं ।



- **दक्षिण काली मंत्र**      **हीं हीं हुं हुं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं हीं हीं स्वाहा ।**  
तांत्रिक इस मंत्र के जरिये दक्षिण काली की साधना कर सिद्धि प्राप्ति की कामना करते हैं। यदि शत्रुओं का भय सता रहा है तो आप गुरु के मार्गदर्शन से इस मंत्र का जाप कर सकते हैं।
- **दक्षिण काली मंत्र**      **क्रीं हुं हीं दक्षिणे कालिके क्रीं हुं हीं स्वाहा ।**  
यह भी दक्षिण काली का एक प्रचलित मंत्र है। रोग दोष आदि को दूर करने के लिए इस मंत्र से साधना करें। मां काली शीघ्र कृपा करती हैं।
- **दक्षिण काली मंत्र**      **ॐ हुं हुं क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं दक्षिणकालिके हुं हुं क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं स्वाहा ।**  
इस मंत्र में भी विभिन्न बीज मंत्रों को सम्मिलित किया गया है जिससे मंत्र और अधिक शक्तिशाली हो जाता है। मां काली को शीघ्र प्रसन्न करने के लिए तांत्रिक या सन्यासी इस मंत्र के द्वारा मां काली की साधना करते हैं।
- **दक्षिण काली मंत्र**      **ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं हीं हीं दक्षिणकालिके स्वाहा ।**  
यह काली माता का विशिष्ट मंत्र है इसका प्रयोग तांत्रिक साधना में किया जाता है।
- **भद्रकाली मंत्र**      **ॐ हौं काली महाकाली किलिकिले फट् स्वाहा ।**  
मां भद्रकाली के इस मंत्र का प्रयोग शत्रुओं को वश में करने के लिये किया जाता है। शत्रुओं के तीव्र विनाश के लिये मां भद्रकाली की साधना की जाती है। मां भद्रकाली को धर्म, कर्म और अर्थ की सिद्धि देने वाली माना जाता है। साधक जिस भी कामना से भद्रकाली की साधना करता है, उनकी उपासना करता है, वह पूर्ण होती है।
- **शमशान काली मंत्र**      **ऐं हीं श्रीं क्लीं कालिके क्लीं श्रीं हीं ऐं ।**  
यह माना जाता है कि शमशान काली शमशान में वास करती हैं व शव की सवारी करती हैं। तंत्र विद्या के अनुसार शमशान काली की साधना शवारुढ़ यानि शव पर बैठकर की जाती है। इसलिए यह बहुत ही जटिल एवं अमानवीय साधना भी मानी जाती है जो कि सामाजिक व कानूनी रूप से लगभग प्रतिबंधित है। फिर भी लकड़ी आदि के टुकड़ों में प्राण प्रतिष्ठा कर उसे शव का रूप देकर भी तांत्रिक शमशान काली की साधना करते हैं। भूत-प्रेत, पिशाचादि को वश में करने के लिए शमशान काली की साधना की जाती है।
- **गायत्री मंत्र (काली)**      **ॐ कालिकायै च विद्महे, श्मशानवासिन्यै धीमहि, तन्नो काली प्रचोदयात् ।**

### ■ मंत्र

ॐ ए क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रसौः ऐं ह्रसौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं जूं क्लीं सं लं श्रीं रः अं  
आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं लृं एं ऐं ओं औं अं अः ऊं कं खं गं घं ङं चं छं जं  
झं ञं ङं टं ठं डं ढं णं उं तं थं दं धं नं ऊं पं फं बं भं मं ऊं यं रं लं वं ऊं शं षं  
हं क्षं स्वाहा ।

### ■ विधि

यह महाकाली का उग्र मंत्र है। इसकी साधना विंध्याचल के अष्टभुजा पर्वत पर त्रिकोण में स्थित काली खोह में करने से शीघ्र सिद्धि होती है अथवा श्मशान में भी साधना की जा सकती है, लेकिन घर में साधना नहीं करनी चाहिए। जप संख्या 1100 है, जिन्हें 90 दिन तक अवश्य करना चाहिए। दिन में महाकाली की पंचोपचार पूजा करके यथासंभव फलाहार करते हुए निर्मलता, सावधानी, निभीर्कता पूर्वक जप करने से महाकाली सिद्धि प्रदान करती हैं। इसमें होमादि की आवश्यकता नहीं होती।

### ■ फल

यह मंत्र सार्वभौम है। इससे सभी प्रकार के सुमंगलों, मोहन, मारण, उच्चाटनादि तंत्रोक्त षड्कर्म की सिद्धि होती है।



## ॥ काली ध्यानम् ॥

- दक्षिणा काली ध्यान      करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतर्भुजाम् ।  
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम् ॥
- सद्यः छिन्नशिरः खंगवामाधोर्द्ध्व कराम्बुजाम् ।  
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणोर्ध्वाधः पाणिकाम् ॥
- महामेघ प्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम् ।  
कण्ठावसक्त मुण्डाली गलद्-रुधिर चर्चिताम् ॥
- कर्णावतंसनानीत शवयुग्म भयानकाम् ।  
घोरदंष्ट्रा करालास्यां पीनोन्नत पयोधराम् ॥
- शवानां कर संघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ।  
सृक्कद्वयगलद् रक्तधारां विस्फुरिताननाम् ॥
- घोररावां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम् ।  
बालार्क मण्डलाकार लोचन त्रितयान्विताम् ॥
- दन्तुरां दक्षिण व्यापि मुक्तालम्बिकचोच्चयाम् ।  
शवरूप महादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ॥
- शिवाभिर्घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।  
महाकालेन च समं विपरीत रतातुराम् ॥
- सुखप्रसन्न वदनां स्मेरानन सरोरुहाम् ।  
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं सर्वकामार्थ सिद्धिदाम् ॥

## ॥ काली कर्पूर स्तोत्रम् ॥

- कर्पूरं मध्यमान्त्य स्वरपर रहितं सेन्दु वामाक्षि युक्तं ।  
बीजन्ते मातरेतज्जिपुरहरवधु त्रिःकृतं ये जपन्ति ।  
तेषां गद्यानि च मुखकुहरादुल्लसन्त्येव वाचेः ।  
स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधर रुचिरुचिरे सर्व्व सिद्धिं गतानाम् ॥ ॥ १ ॥
- ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतं बीजमन्यन्महेशि द्वन्द्वं  
ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित् ।  
जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं मोहयन्न्म्बुजाक्षीवृन्दं  
चन्द्रार्द्धचूडे प्रभवति स महाघोरवाणावतंस ॥ ॥ २ ॥
- ईशौ वैश्वानरस्थः शशधरविलसद्वामनेत्रेण युक्तो  
बीजं ते द्वन्द्वमन्यद्वि गलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति  
द्वेष्टारंघ्नन्ति ते च त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयन्ति  
सृक्कद्वन्द्वस्त्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिकेति ॥ ॥ ३ ॥
- उधर्द्धवामे कृपाणं करतल-कमले छिन्नमुण्डं तथाधः  
सव्ये चाभीर्वरञ्च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिकेति ।  
जप्तवैतन्नामवर्णं तव मनुविभवं भावयन्त्येतदम्ब  
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितवदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ॥ ॥ ४ ॥
- वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरति ललितं तत्त्रयं कूर्चयुग्मं  
लज्जाद्वन्द्वञ्च पश्चात्स्मितमुखि तदधष्टद्वयं योजयित्वा ।  
मातर्ये ये जपन्ति स्मरहर महिले भावयन्ते स्वरूपं ते  
लक्ष्मीलास्यलीलाकमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥ ॥ ५ ॥
- प्रत्येकं वा त्रयं वा द्वयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं  
त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भाववन्तो जपन्ति ।  
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुबिम्बे  
दिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कण्ठपीनस्तनाद्वये ॥ ॥ ६ ॥
- गतासूनां बाहु प्रकरकृतकञ्चीपरिलस-  
न्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवन विधात्रीं त्रिनयनाम् ।  
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरत-  
प्रसक्तां त्वां ध्यायञ्जजननि जडचेता अपि कविः ॥ ॥ ७ ॥

- शिवाभिर्घोराभिः शवनिवसमुण्डास्थिनिकरैः ।  
परं संकीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम् ॥  
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरि सुरतेनातियुवतीं ।  
सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ॥ ८ ॥
- वदामस्ते किं वा जननि वयमुच्चैर्जैडधियो ।  
न धाता नार्पाशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम् ॥  
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमसिते ।  
तदेतत्क्षन्तव्यं न खलु शिशुरोषः समुचितः ॥ ९ ॥
- समन्तादापीनस्तनजघनधृग्यौवनवती  
रतासक्तो नवतं यदि जपति भक्तस्तवममुम् ॥  
विवासास्त्वां ध्यायन् गलितचिकुरस्तस्य वशगाः ।  
समस्ताः सिद्धोघा भुवि चिरतरं जीवति कविः ॥ १० ॥
- समः सुस्थीभूतो जपति विपरीतो यदि सदा ।  
विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकालसुरताम् ॥  
तदा तस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः ।  
कराम्भोजे वश्याः स्मरहरवधु सिद्धिनिवहाः ॥ ११ ॥
- प्रसूते संसारं जननि जगतीं पालयति च ।  
समस्तं क्षित्यादि प्रलय समये संहरति च ॥  
अतस्त्वां धातापि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि ।  
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीम् ॥ १२ ॥
- अनेके सेवन्ते भवदधिकगीर्वाणनिवहान् ।  
विमूढास्ते मातः किमापि न हि जानन्ति परमम् ॥  
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरिञ्चादिविबुधैः ।  
प्रसक्तोऽस्मि स्वैरं रतिरस महानन्दनिरताम् ॥ १३ ॥
- धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं ।  
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम् ॥  
स्तुतिः का ते मातस्तव-करुणया मामगतिकं ।  
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥ १४ ॥
- श्मशानस्थस्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः ।  
सहस्रन्तर्वर्काणां निजगलित-वीर्येण कुसुमम् ॥



जपंस्त्वत्प्रत्येकममुमपि तव ध्याननिरतो ।  
महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः ॥

॥१५॥

- गृहे सम्मार्ज्जन्या परिगलितवीर्यं हि चिकुरं ।  
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने ॥  
समुच्चार्य प्रेम्णा जपमनु सकृत कालि सततं ।  
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः ॥

॥१६॥

- सुपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मंदिरमहो ।  
पुरो ध्यायन् यदि जपति भक्तस्तवममुम् ॥  
स गन्धर्व्वश्रेणीपतिरिव कवित्वामृतनदी ।  
नदीनः पर्य्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति ॥

॥१७॥

- त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेर वदनां ।  
महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्यनिरताम् ॥  
महासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो ।  
जनो यो ध्यायेत्त्वामयि जननि स स्यात्स्मरहरः ॥

॥१८॥

- सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्ज्जारमसिते ।  
परञ्चौष्ट्रं मेषं नरमहिषयोश्छागमपि वा ॥  
बलिन्ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां ।  
सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदम पूर्वा प्रभवति ॥

॥१९॥

- वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो ।  
दिवा मातर्युष्मच्चरणयुगलध्याननिपुणः ॥  
परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं ।  
जनो लक्षं स स्यात्स्मरहरसमान, क्षितितले ॥

॥२०॥

- इदं स्तोत्रं मातस्तवमनुसमुद्धारणजपः ।  
स्वरूपाख्यं पादाम्बुज-युगल-पूजा-विधियुतम् ॥  
निशार्द्धं वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति ।  
प्रलापे तस्यापि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥

॥२१॥

- कुरंगाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रेमतरलं ।  
वशस्तस्य क्षोणी पतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः ॥  
रिपुः कारागारं कलयति च तत्केलिकलया ।  
चिर जीवन्मुक्तः स भवति च भक्तः प्रतिजनुः ॥

॥२२॥

॥ इति श्रीमन् महाकालि विरचितं श्रीमद् दक्षिणकालिकायाः स्वरूपाख्यं स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

## ॥ जगन् मंगल काली कवचम् ॥

इसके श्रवण मात्र से जन्मो जन्मांतर के पाप कट जाते हैं। देवी काली का यह कवच भोग व मोक्ष प्रदायक, मोहिनी शक्ति देने वाला, अघों (पापों) का नाश करने वाला, विजयश्री दिलाने वाला अद्भुत कवच है। इसका नित्य पाठ करने से मनुष्य में अनुपम तेज उत्पन्न होता है, जिसके प्रभाव से तीनों ही लोकों के जीव उस मनुष्य के वशीभूत हो जाते हैं। तेज प्रभाव के गुण से युत यह कवच देवी को अतिप्रिय भी है।

- **भैरव्युवाच** काली पूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधः प्रभो ।  
इदानीं श्रोतु मिच्छामि कवचं पूर्व सूचितम् ॥  
त्वमेव शरणं नाथ त्रापि मां दुःख संकटात् ।  
त्वमेव स्त्रष्टा पाता च संहर्ता च त्वमेव हि ॥
- **भैरव उवाच** रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राण-वल्लभे ।  
श्रीजगन्मंगलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम् ।  
पठित्वा धरयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत् क्षणात् ॥
  - नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ।  
योगेशं क्षोभमनयद्यद्धृत्वा च रघूद्वहः ।  
वरवृत्तान् जघानैव रावणादि निशाचरान् ॥
  - यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्य विजयी प्रभुः ।  
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छत्रीपतिः ।  
एवं हि सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ॥
- **विनियोग** श्रीजगन्मंगलस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिःशिवः ।  
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च कालिका दक्षिणेरिता ॥
  - जगतां मोहने दुष्टानिग्रहे भुक्ति मुक्तिषु ।  
योषिदा कर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥
- **कवचम्** शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा ।  
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटञ्च कालिका खंग धारिणी ॥ १ ॥
  - हुं हुं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम ।  
दक्षिणा कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ॥ २ ॥
  - क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हुं हुं पातु कपोलकम् ।  
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी ॥ ३ ॥

- द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा ।  
खंग-मुण्ड-धरा काली सर्वांगमभितोऽवतु ॥ ४ ॥
- क्रीं हुं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम ।  
हे हुं ओं ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥ ५ ॥
- अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका ।  
क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम ॥ ६ ॥
- क्रीं नाभिं मध्यदेशञ्च दक्षिणा कालिकाऽवतु ।  
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठन्तु कालिका सा दशाक्षरी ॥ ७ ॥
- ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके हूं ह्रीं पातु कटीद्वयम् ।  
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा पातूरुयुग्मकम् ।  
ॐ ह्रां क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी मम ॥ ८ ॥
- कालीहन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा ।  
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु ।  
क्रीं हूं हरीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम ॥ ९ ॥
- खंगमुण्ड धरा काली वरदा भयवारिणी ।  
विद्याभिःसकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवतु ॥ १० ॥
- काली कपालिनी कुल्वा कुरुकुल्ला विरोधिनी ।  
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषुः ॥ ११ ॥
- नीला घना बालिका च माता मुद्रामिता च माम् ।  
एताः सर्वाः खंगधरा मुण्डमाला विभूषिताः ॥ १२ ॥
- रक्षन्तु मां दिक्षु देवी ब्राह्मी नारायणी तथा ।  
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥ १३ ॥
- वाराही नारसिंही च सर्वाश्चामितभूषणाः ।  
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां विदिक्षु यथा तथा ॥ १४ ॥
- प्रति फलम् इत्येवं कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् ।  
श्रीजगन्मंगलं नाम महामन्त्रौघविग्रहम् ॥ १५ ॥



- त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् ।  
गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात् कवचं ततः ।  
कवचं त्रिःसकृद्वापि यावज्जीवञ्च वा पुनः ॥ ॥१६॥
- एतच्छतार्द्धमावृत्य त्रैलोक्यविजयो भवेत् ।  
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः ।  
महाकविर्भवेन्मासात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ ॥१७॥
- पुष्पाञ्जलीन् कालिकायैमूलेनैव पठेत् सकृत् ।  
शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ ॥१८॥
- भूर्जो विलिखितञ्चैव स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ।  
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि ॥ ॥१९॥
- त्रैलोक्यं मोहयेत् क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात् ।  
बह्वपत्या जीवत्सा भवत्येव न संशयः ॥ ॥२०॥
- न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ।  
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यश्चान्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥ ॥२१॥
- स्पर्द्धामुद्धूय कमला वाग्देवी मंदिरे मुखे ।  
पौत्रान्तस्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् ॥ ॥२२॥
- इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्कालिदक्षिणाम् ।  
शतलक्षं प्रजप्यापि तस्य विद्या न सिध्यति ।  
स शस्त्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ ॥२३॥

॥ इति श्री जगन्मंगल काली कवचम् सम्पूर्णम् ॥

## ॥ भद्रकाली स्तुतिः ॥

ब्रह्मविष्णु ऊचतुः

नमामि त्वां विश्वकर्त्रीं परेशीं  
नित्यामाद्यां सत्यविज्ञानरूपाम् ।  
वाचातीतां निर्गुणां चातिसूक्ष्मां  
ज्ञानातीतां शुद्धविज्ञानगम्याम् ॥

॥ १॥

द्यौस्ते शीर्षं नाभिदेशो नभश्च  
चक्षूषि ते चन्द्रसूर्यानलास्ते ।  
उन्मेषास्ते सुप्रबोधो दिवा च  
रात्रिर्मातश्चक्षुषोस्ते निमेषम् ॥

॥ ५॥

पूर्णां शुद्धां विश्वरूपां सुरूपां  
देवीं वन्द्यां विश्ववन्द्यामपि त्वाम् ।  
सर्वान्तःस्थामुत्तमस्थानसंस्था-  
मीडे कालीं विश्वसम्पालयित्रीम् ॥

॥ २॥

वाक्यं देवा भूमिरेषा नितम्बं  
पादौ गुल्फं जानुजङ्घस्त्वधस्ते ।  
प्रीतिर्धर्मोऽधर्मकार्यं हि कोपः  
सृष्टिर्बोधः संहतिस्ते तु निद्रा ॥

॥ ६॥

मायातीतां मायिनीं वापि मायां  
भीमां श्यामां भीमनेत्रां सुरेशीम् ।  
विद्यां सिद्धां सर्वभूताशयस्था-  
मीडे कालीं विश्वसंहारकर्त्रीम् ॥

॥ ३॥

अग्निर्जिह्वा ब्राह्मणास्ते मुखाब्जं  
सन्ध्ये द्वे ते भ्रूयुगं विश्वमूर्तिः ।  
श्वासो वायुर्बाहवो लोकपालाः  
क्रीडा सृष्टिः संस्थितिः संहतिस्ते ॥

॥ ७॥

नो ते रूपं वेत्ति शीलं न धाम  
नो वा ध्यानं नापि मन्त्रं महेशि ।  
सत्तारूपे त्वां प्रपद्ये शरण्ये  
विश्वाराध्ये सर्वलोकैकहेतुम् ॥

॥ ४॥

एवंभूतां देवि विश्वात्मिकां त्वां  
कालीं वन्दे ब्रह्मविद्यास्वरूपाम् ।  
मातः पूर्णे ब्रह्मविज्ञानगम्ये  
दुर्गेऽपारे साररूपे प्रसीद ॥

॥ ८॥

॥ इति श्री महाभागवते महापुराणे ब्रह्म विष्णु कृता भद्रकाली स्तुतिः सम्पूर्णा ॥

## ॥ श्री कालिकाष्टकम् ॥

### ध्यानम्

गलद् रक्तमुण्डावलीकण्ठमाला,  
महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला ।  
विवस्त्रा श्मशानलया मुक्तकेशी,  
महाकालकामाकुला कालिकेयम् ॥ ॥१॥

भजे वामयुग्मे शिरोऽसिं दधाना,  
वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव ।  
सुमध्याऽपि तुङ्गस्तनाभारनम्रा,  
लसद् रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या ॥ ॥२॥

शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी,  
लसत्प्रेतपाणिं प्रयुक्तैककाञ्ची ।  
शवाकारमञ्चाधिरूढा शिवाभि-  
श्रुतिर्दिक्षशब्दायमानाऽभिरेजे ॥ ॥३॥

### स्तुतिः

विरञ्च्यादि देवास्त्रयस्ते गुणांस्त्रीन्,  
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः ।  
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥४॥

जगन्मोहनीयं तु वाग्वादिनीयं,  
सुहृत्पोषिणी शत्रु संहारणीयम् ।  
वचस्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयं,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥५॥

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली,  
मनोजांस्तु कामान् यथार्थं प्रकुर्यात् ।

तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥६॥

सुरा पान मत्ता सभुक्ता नुरक्ता,  
लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवते ।  
जप ध्यान पूजा सुधाधौत पङ्का,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥७॥

चिदानन्दकन्दं हसन् मन्दमन्दं,  
शरच्चन्द्र कोटि प्रभा पुञ्जबिम्बम् ।  
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥८॥

महामेघकाली सुरक्तापि शुभ्रा,  
कदाचिद् विचित्रा कृतिर्योगमाया ।  
न बाला न वृद्धा न कामातुरापि,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥९॥

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं,  
मया लोकमध्ये प्रकाशीकृत यत् ।  
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥१०॥

### फलश्रुतिः

यदि ध्यानयुक्तं पठेद् यो मनुष्य-  
स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च ।  
गृह चाष्ट सिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः,  
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ॥११॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं श्री कालिकाष्टकं सम्पूर्णम् ॥





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

**KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**

## ॥ माँ काली अष्टोत्तर-शत नामावली ॥

1. ॐ काल्यै नमः।
2. ॐ कपालिन्यै नमः।
3. ॐ कान्तायै नमः।
4. ॐ कामदायै नमः।
5. ॐ कामसुन्दर्यै नमः।
6. ॐ कालरात्र्यै नमः।
7. ॐ कालिकायै नमः।
8. ॐ कालभैरवपूजितायै नमः।
9. ॐ कुरूकुल्लायै नमः।
10. ॐ कामिन्यै नमः।
11. ॐ कमनीयस्वभाविन्यै नमः।
12. ॐ कुलीनायै नमः।
13. ॐ कुलकर्त्र्यै नमः।
14. ॐ कुलवर्त्मप्रकाशिन्यै नमः।
15. ॐ कस्तूरीरसनीलायै नमः।
16. ॐ काम्यायै नमः।
17. ॐ कामस्वरूपिण्यै नमः।
18. ॐ ककारवर्णनिलयायै नमः।
19. ॐ कामधेन्वै नमः।
20. ॐ कारालिकायै नमः।
21. ॐ कुलकान्तायै नमः।
22. ॐ करालास्यायै नमः।
23. ॐ कामार्तायै नमः।
24. ॐ कलावत्यै नमः।
25. ॐ कृशोदर्यै नमः।
26. ॐ कामाख्यायै नमः।
27. ॐ कौमार्यै नमः।
28. ॐ कुलपालिन्यै नमः।
29. ॐ कुलजायै नमः।
30. ॐ कुलकन्यायै नमः।
31. ॐ कलहायै नमः।
32. ॐ कुलपूजितायै नमः।
33. ॐ कामेश्वर्यै नमः।
34. ॐ कामकान्तायै नमः।
35. ॐ कुञ्जेश्वरगामिन्यै नमः।
36. ॐ कामदात्र्यै नमः।
37. ॐ कामहर्त्र्यै नमः।
38. ॐ कृष्णायै नमः।
39. ॐ कपर्दिन्यै नमः।
40. ॐ कुमुदायै नमः।
41. ॐ कृष्णदेहायै नमः।
42. ॐ कालिन्द्यै नमः।
43. ॐ कुलपूजितायै नमः।
44. ॐ काश्यप्यै नमः।
45. ॐ कृष्णमात्रे नमः।
46. ॐ कुशिशङ्ख्यै नमः।
47. ॐ कलायै नमः।
48. ॐ क्रीरूपायै नमः।
49. ॐ कुलगम्यायै नमः।
50. ॐ कमलायै नमः।
51. ॐ कृष्णपूजितायै नमः।
52. ॐ कृशाङ्ग्यै नमः।
53. ॐ किन्नर्यै नमः।
54. ॐ कर्त्र्यै नमः।
55. ॐ कलकण्ठ्यै नमः।
56. ॐ कार्तिक्यै नमः।
57. ॐ कम्बुकण्ठ्यै नमः।
58. ॐ कौलिन्यै नमः।
59. ॐ कुमुदायै नमः।
60. ॐ कामजीविन्यै नमः।
61. ॐ कुलस्त्रियै नमः।
62. ॐ कीर्तिकायै नमः।
63. ॐ कृत्यायै नमः।
64. ॐ कीर्त्यै नमः।
65. ॐ कुलपालिकायै नमः।
66. ॐ कामदेवकलायै नमः।
67. ॐ कल्पलतायै नमः।
68. ॐ कामाङ्गवर्धिन्यै नमः।
69. ॐ कुन्तायै नमः।
70. ॐ कुमुदप्रीतायै नमः।
71. ॐ कदम्बकुसुमोत्सुकायै नमः।
72. ॐ कादम्बिन्यै नमः।
73. ॐ कमलिन्यै नमः।
74. ॐ कृष्णानन्दप्रदायिन्यै नमः।
75. ॐ कुमारीपूजनरतायै नमः।
76. ॐ कुमारीगणशोभितायै नमः।
77. ॐ कुमारीरञ्जनरतायै नमः।
78. ॐ कुमारीव्रतधारिण्यै नमः।
79. ॐ कङ्काल्यै नमः।
80. ॐ कमनीयायै नमः।
81. ॐ कामशास्त्रविशारदायै नमः।
82. ॐ कपालखट्वाङ्गधरायै नमः।
83. ॐ कालभैरवरूपिण्यै नमः।
84. ॐ कोटर्यै नमः।
85. ॐ कोटराक्ष्यै नमः।
86. ॐ काशीवासिन्यै नमः।
87. ॐ कैलासवासिन्यै नमः।
88. ॐ कात्यायन्यै नमः।
89. ॐ कार्यकर्यै नमः।
90. ॐ काव्यशास्त्रप्रमोदिन्यै नमः।
91. ॐ कामाकर्षणरूपायै नमः।
92. ॐ कामपीठनिवासिन्यै नमः।
93. ॐ कङ्गिन्यै नमः।
94. ॐ काकिन्यै नमः।
95. ॐ क्रीडायै नमः।
96. ॐ कुत्सितायै नमः।
97. ॐ कलहप्रियायै नमः।
98. ॐ कुण्डगोलोद्भवप्राणायै नमः।
99. ॐ कौशिक्यै नमः।
100. ॐ कीर्तिवर्धिन्यै नमः।
101. ॐ कुम्भस्तन्यै नमः।
102. ॐ कटाक्षायै नमः।
103. ॐ काव्यायै नमः।
104. ॐ कोकनदप्रियायै नमः।
105. ॐ कान्तारवासिन्यै नमः।
106. ॐ कान्त्यै नमः।
107. ॐ कठिनायै नमः।
108. ॐ कृष्णवल्लभायै नमः।